शेख़ फ़रीद – सबद १०१

फरीदा मउतै दा बंना एवै दिसै जिउ दरीआवै ढाहा ॥

सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८३

फरीदा मउतै दा बंना एवै दिसै जिउ दरीआवै ढाहा ॥
अगै दोजकु तपिआ सुणीऐ हूल पवै काहाहा ॥
इकना नो सभ सोझी आई इकि फिरदे वेपरवाहा ॥
अमल जि कीतिआ दुनी विचि से दरगह ओगाहा ॥९८॥

सार: हमारी ज़िंदगी की सतह के नीचे, अक्सर हमारी जानकारी के बिना ही समय धीरे-धीरे हमें कमज़ोर करता जाता है। हमारे पास चुनाव होता है, या तो हम पूरी तरह से अपने अस्तित्व से जुड़ जाएँ या फिर अपने दिन बिना सोचे-समझे यूँ ही गुज़ार दें। जागरूकता से, हर पल एक सार्थक अनुभव का अवसर बन जाता है, वहीं, भटकाव हमें गहरी समझ से दूर रखता है। भले ही बाहर से दोनों रास्तों का सफ़र एक जैसा ही दिखे लेकिन एक रास्ता संतुष्टि की ओर लेकर जाता है जबकि दूसरा असंतोष की ओर। ज़िंदगी का मतलब सिर्फ़ अपने जीवन के साल बढ़ाना नहीं है, बल्कि जब तक हम जीवित हैं तब तक वास्तविक तौर से जीना है।

फरीदा मउतै दा बंना एवै दिसै जिउ दरीआवै ढाहा ॥
फ़रीद कहते हैं कि मृत्यु की कगार एक ढहते हुए नदी के किनारे जैसी है। अर्थात यह कि जिस तरह मिट्टी चुपचाप कटती रहती है, उसी तरह हमारा शरीर भी धीरे-धीरे क्षीण होता जाता है, यह हमें प्रेरित करता है कि हम हर पल को संजोकर रखें, इससे पहले कि वह हमारे हाथों से फिसल जाए।

अगै दोजकु तपिआ सुणीऐ हूल पवै काहाहा ॥
आगे एक जलता हुआ नरक है, यह सुनकर, व्यक्ति भय से चीख उठता है और पीड़ा से भर जाता है। यह रूपक के तौर पर नरक की ओर संकेत करता है, लेकिन किसी दूरस्थ परलोक के रूप में नहीं बल्कि एक अशांत मन द्वारा उत्पन्न आंतरिक पीड़ा के रूप में।

इकना नो सभ सोझी आई इकि फिरदे वेपरवाहा ॥
कुछ व्यक्तियों ने इस वास्तविकता की गहरी समझ प्राप्त कर ली है जबकि अन्य लोग जीवन में उदासीनता और अज्ञानता में ही भटकते रहते हैं। यह एकाग्रता और भटकाव के बीच के अंतर को दर्शाता है जहाँ जीवन को स्पष्टता के साथ अपनाया जा सकता है या फिर अज्ञानता में जिया जा सकता है।

अमल जि कीतिआ दुनी विचि से दरगह ओगाहा ॥९८॥
इस संसार में हम जो भी कर्म करते हैं, वह हमारी अंतरात्मा की अदालत में गवाह बनकर खड़े होते हैं। यह प्रतीक है कि जब हम ईमानदारी से अपने स्वयं के सत्य का मूल्यांकन करते हैं तब हमारे द्वारा किए गए चुनाव किस तरह एक आंतरिक लेखे-जोखे का हिसाब बनकर हमारे सामने आ सकते हैं। (९८)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद ज़ोर देकर कहते हैं कि हमारे कर्म हमारी वास्तविक आंतरिक हालत को स्पष्टता से दिखाते हैं। किसी बाहरी फ़ैसले की ज़रूरत नहीं है, हर इंसान का ज़मीर ही साक्षी है। वह उन लोगों के बीच साफ़ भिन्नता बताते हैं जिन्होंने इस गहरी समझ को अपना लिया है और उन लोगों के बीच जिन्होंने बेपरवाही को चुना है। यह बात सामने लाकर कि नरक कोई दूर की जगह नहीं है, वह दिखाते हैं कि यह असल में मन की पीड़ा और दुःख के रूप में मौजूद है, जो अज्ञानता से उत्पन्न होता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com